डॉ. मधु प्रधान

बदल गये घर आँगन

दिन बदले /फिर मौसम बदले
बदल गए घर आँगन
नहीं बदल पाया/पर अब तक
यह पागल भावुक मन ।

सबकी अपनी-अपनी बातें
अपने ही सुख-दुःख हैं
अलग-अलग हैं राग , मीत अब
अलग-अलग ही ढफ हैं
मिल जुल कर /गा सकें मल्हारें
नहीं रहा वह जीवन ।।

पर पीड़ा में उमड़ा करते
थे आँखों के बादल
खारे पानी के वह मोती
हुये पलक से ओझल
अनदेखा भविष्य /आज पर
है बर्फ़ीली सिहरन ।।

आशा की अनमोल इबारत
के अक्षर धुँधलाये
देखें अब ये हवा उड़ा कर
पात कहाँ ले जाये
ठिठक रहे हैं पाँव /देहरी पर
लिखी है टूटन ।।
दिन बदले /फिर मौसम बदले
बदल गये घर आँगन

कभी-कभी यह मन कहता है

कभी-कभी
यह मन कहता है
खुद से भी बतियायें ।

घिरे भीड़ में रहते हैं पर
खुद से कब मिल पाते
मौन ओढ़ कर इस दुनिया के
नाते सभी निभाते
फिर समेट /टूटे सपनों को
इक गुलदान सजायें ।।

झूम- झूम कर फूल हँस रहे
हवा इन्हें दुलराती
हँसी - खुशी में साथ निभाने
तितली भी आ जाती
ले कर उड़ें /पंख तितली से
भौरों के संग गायें ।।

शह और मात मिली जीवन में
कुछ खोया कुछ पाया
अन्तर - मन में कसक उठी
थपकी दे उसे सुलाया
भावों का/उन्मेष दबा कर
हर पल क्यों पछ्तायें ।।

घुटन अजदहे की गुंजल सी
अब उतार कर फेकें
किसी पीर को याद करें
मन्दिर में माथा टेकें
ममता का /आँचल ढूढें फिर
चुपके से सो जाएँ ।।